Patrika (Indore), 17th May 2023, Front Page-01

इनोवेशन : हादसे में घायलों की होगी मदद, केंद्र सरकार के इनीशिएटिव पर आइआइटी इंदौर, एम्स भोपाल, आरजीपीवी व मैनिट बना रहा मेडिकल इक्विपमेंट से लैस ड्रोन

मिनटों में मौके पर मददगार ड्रोन, स्कैनिंग रिपोर्ट से गोल्डन ऑवर में बचेगी घायलों की जान

शशांक अवस्थी
patrika.com

भोपाल. दुर्घटना और आपदाओं में बड़ी संख्या में घायल होने वालों की मदद अब ड्रोन से होगी। सुदूर अंचलों में भी इमरजेंसी में सेहत की जांच के लिए शहरों की दौड़ नहीं लगानी होगी। अल्ट्रासाउंड और अन्य जांच उपकरणों से लैस ड्रोन मिनटों में मौके पर पहुंचेगा। हादसों में अति गंभीर मरीजों को गोल्डन ऑवर में बचाने मौके पर ही स्कैन करेगा। लैब को रिपोर्ट भेजेगा और तत्काल राहत कार्य में जुटी टीम को रिपोर्ट भेजेगा। इससे तुरंत अति गंभीर मरीजों को पहले अस्पताल पहुंचाने में मदद मिलेगी। अस्पताल भी पहले रिपोर्ट मिलने से जरूरी व्यवस्थाएं कर सकेंगे।

दरअसल, गोल्डन ऑवर में मिलने वाली इस मदद से हादसों में होने वाली मृत्यु दर कम करने की तैयारी है। इसके लिए एम्स भोपाल, मैनिट, आरजीपीवी और आइआइटी इंदौर मेडिकल इक्विपमेंट से लैस जीवन रक्षक ड्रोन बना रहे हैं।

यह खास...

- एम्स भोपाल, आइआइटी इंदौर, आरजीपीवी और मैनिट प्रोजेक्ट पर काम कर रहे हैं
- मरीज की स्कैनिंग के लिए ड्रोन में हाई रेजोल्यूशन कैमरा, इन्फ्रारेड, अल्ट्रासाउंड जैसी तकनीक होगी।
- ड्रोन के शेप, साइज, मेडिकल इक्विपमेंट की प्लेसमेंट जैसे फैसले सभी संस्थान मिलकर करेंगे।
- प्रोटोटाइप बनने के बाद अंतिम मंजूरी केंद्रीय मंत्रालय से मिलेगी।

ऐसे हालात में बेहद कारगर

1. हादसों में घायलों की संख्या ज्यादा होने पर एंबुलेंस और मेडिकल टीम ज्यादा से ज्यादा लोगों को अस्पताल पहुंचाने की कोशिश करती है।
2. अस्पतालों को मरीजों की स्थिति पता न होने से कई बार जरूरी व्यवस्थाएं नहीं बन पातीं। इससे मौतों का आंकड़ा बढ़ता है।
3. कई बार अंदरूनी जख्म से गंभीर मरीजों का मौके पर आकलन नहीं हो पाता, वे देर से अस्पताल पहुंच पाते हैं।
4. दूरस्थ अंचलों में आवागमन व्यवस्था न होने से कई दफे गंभीर मरीज जांच के लिए अस्पताल नहीं पहुंच पाते।

कई तकनीक से लैस होगा ड्रोन

एम्स भोपाल समेत चार संस्थान इस प्रोजेक्ट पर काम कर रहे हैं। ऐसा ड्रोन तैयार किया जा रहा है, जो इन्फ्रारेड व अल्ट्रासाउंड जैसी तकनीक से लैस होगा।

डॉ. अजय सिंह,
कार्यपालक निदेशक, एम्स

आरजीपीवी के कुलपति प्रो. सुनील कुमार ने बताया, यह केंद्र सरकार का इनीशिएटिव है। मेडिकल फील्ड में ड्रोन से ज्यादा लोगों की मदद का विकल्प तैयार करना है।